

वर मांगे काहे-कैंकई का मति मारी रे
 वर मांगे-वर मांगे

राज तिलक की भई तैयारी
 हरष उठे रे-सब नर-नारी रे

वर मांगे-----

राम नंगारिया खूब सजी है
 इन्द्रपुरी सी लगे रे प्यारी

वर मांगे-----

कोप भवन में आन विराजीं
 आन विराजीं काहे आन विराजीं

आजई हति का वर की रे बारी

वर मांगे-----

तुमने दो वर देवे कही थी
 रघुकुल रीत बड़ी रे न्यारी

वर मांगे-----

राम खों वन और भरत सिंगासन
 काहे कलंक ले रई मेहतारी

वर मांगे-----

राजा दशरथ खों कहु न दिखावे
कहु न दिखावे रै कहु न सुहावे

हा रई है दिन में अँधियारी रे

वर माँगे-----

वन जावे खों राम खड़े है
बात पिता की न जाये टारी रे

वर माँगे-----

वनवासी को रूप धरो है
रूप धरो है कैसे रूप धरो है

संगे लखन सीता सुकुमारी रे

वर माँगे-----

आज "श्रीबाबाश्री" कैसी गान गिरी है
गान गिरी है रे आज गिरी है

कर खें अनाथ चले धनु धारी रे-

वर माँगे-----